इकाई – 3

कण्ठस्थश्लोकाः

इकाई की रूपरेखा

3.1 परिचय

3.2 इकाई के उद्देश्य

3.3 कण्ठस्थश्लोकाः

3.4 अपनी प्रगति जांचिए

3.5 सारांश

3.6 मुख्य शब्दावली

3.7 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर

3.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

3.9 आप ये भी पढ़ सकते हैं

3.1 परिचय

प्रस्तुत इकाई के माध्यम से विद्यार्थियों में श्लोकों को अर्थ सहित कण्ठस्थ करने की प्रवृत्ति को जागृत किया जाएगा तथा उनमें श्लोकों को शुद्ध लिखने की परम्परा को भी विकसित किया जाएगा। श्लोकों को यति–गति के साथ तथा सस्वर गायन का अभ्यास करवाया जाएगा। जिससे वे श्लोकोच्चारण कला में प्रवीण हो सकेंगे।

3.2 इकाई के उद्देश्य

- संस्कृत श्लोकों को कण्ठस्थ कर पाएंगे;
- श्लोकों का यति, गति के अनुसार सस्वर उच्चारण कर पाएंगे;
- श्लोकोच्चारण कला में प्रवीण हो सकेंगे;
- आपस में तथा समाज में संस्कृत भाषा तथा श्लोकों का व्यवहार कर सकेंगे।

3.3 कण्ठस्थश्लोकाः

नमूने के तौर पर परीक्षा में कोई चार लिखे।

1. यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु।।

2. त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव।
त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।

3. अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रंचयति।।

4. येषां न विद्या न तपो न दानम्
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भूवि भारभूता
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

5. माता शत्रुः पिता वैंरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।

6. काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः।
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकःपिकः।।

7. यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

8. धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेताः युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय।।

9. वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा –
न्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

10. नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

11. आचारः परमो धर्मः आचारः परमं तपः।
आचार परमं ज्ञानं, आचारात् किं न साध्यते।।

12. विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।।

13. न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य में योगमेश्वरम्।।

14. कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तृमिह प्रवृतः।
ऋते पित्वां न भविष्यन्ति सर्वे ये वस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः।।

15. न वेदयज्ञाध्यनैर्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः।
एवं रूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टु। त्वदन्येन कुरुद्रवीर।।

16. स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृत्यनुरज्यते च।
रक्षासि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंधा।।

17. न जायते म्रियते वा कदाचि–
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो–
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

18. जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।।

19. हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।।

20. सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।

21. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

22. योगस्थः कुरु कर्माणि संगंत्यक्त्वा धनंजय।
सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।

23. यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः।।

24. क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।

25. इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मतोऽनुविधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि।।

26. या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।।

27. असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।

28. कः कस्य पुरुषो बन्धु किमाप्यं कस्य केनचित्।
एको हि जायते जन्तुरेक एव विनश्यति।।

29. विद्यानाम नरस्य रूपमधिंक प्रच्छन्नगुप्तं धनं,
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता,
विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्या विहीनः पशु।।

30. गुणानामेव दौरात्म्यात् धुरि धुर्यो नियुज्यते।
असंजातकिणस्कन्धः सुखं स्वपिति गौर्गलिः।।

31. दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुंक्ते, तस्य तृतीया गतिर्भवति।।

32. अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विढग्धं ब्रह्माऽपि नरं न रंजयति।।

33. वरं पर्वतदुर्गेषु, भ्रान्तं वनचरैः सह।
न मूर्खजनसम्पर्कः, सुरेन्द्रभवनेष्वपि।।

3.4 अपनी प्रगति जांचिए

1 श्लोक के मध्य में विश्राम स्थल (अर्द्ध–विराम) को क्या कहते हैं ?

2 श्लोक का धारा प्रवाह में पढ़ा जाना क्या कहलाता है ?

3 प्रायः प्रत्येक श्लोक में कितने पाद या चरण होते हैं ?

4 श्लोक के चार खण्डों को क्या कहते हैं ?

5 अनुष्टुप् छन्द का अन्य नाम क्या है ?

3.5 सारांश

प्रायः प्रत्येक श्लोक के चार खण्ड होते हैं, जो पाद या चरण कहलाते हैं। ह्रस्व या लघु अक्षर के उच्चारण में जितना समय लगता है, उसे एक मात्रा कहते हैं तथा दीर्घ या गुरु के उच्चारण काल को दो मात्राएँ कहते हैं। अतः जब श्लोक में मात्राओं की गिनती की जाती हैं, तब लघु की एक और गुरु की दो मात्राएँ गिनी जाती है। श्लोक के मध्य में विश्राम स्थल (अर्द्ध–विराम) को यति या विराम कहते हैं। श्लोक में गति, लय या प्रवाह का ध्यान भी रखना पड़ता है। गति का अर्थ है – श्लोक का धारा प्रवाह में पढ़ा जाना। इस प्रकार प्रस्तुत इकाई में श्लोक का सामान्य ज्ञान देते हुए विद्यार्थियों में श्लोकों को अर्थ सहित कण्ठस्थ करने की प्रवृत्ति को जागृत किया गया ताकि वे श्लोकों का सस्वर एवं शुद्ध गायन तथा लेखन भी कर सकें।

3.6 मुख्य शब्दावली

- **यति** – श्लोक के मध्य में विश्राम–स्थल (अर्द्ध–विराम)
- **गति** – श्लोक का धारा प्रवाह में पढ़ा जाना
- **पाद–चरण** – प्रायः प्रत्येक श्लोक के चार खण्ड

- **एक मात्रा** – ह्रस्व या लघु अक्षर के उच्चारण में लगने वाला समय
- **दो मात्राएं** – दीर्घ या गुरु अक्षर का उच्चारण–काल

3.7 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर

1 यति

2 गति

3 चार

4 पाद या चरण

5 श्लोक

3.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

1 इस पुस्तक में छपे श्लोकों से भिन्न पाँच श्लोकों को कण्ठस्थ कीजिए।

2 इस पुस्तक में छपे श्लोकों से भिन्न चार श्लोकों का शुद्ध लेखन कीजिए।

3 किसी दस श्लोकों का यति–गति के साथ सस्वर उच्चारण कीजिए।

4 यति तथा गति की अवधारणा को श्लोक सहित स्पष्ट कीजिए।

5 लघु–गुरु की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए किसी श्लोक में लघु तथा गुरु के चिह्न अंकित कीजिए।

3.9 आप ये भी पढ़ सकते हैं

1 संस्कृत व्याकरण एवं छन्दोज्ञान – रमेश चन्द्र, रचना प्रकाशन, जयपुर।

2 श्रीमद्भगवद्गीता – गीता प्रेस, गोरखपुर।

3 मेघदूतम् – महाकवि कालिदास, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

4 बुद्धचरितम् – महाकवि अश्वघोष, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी।

5 रामायण – महर्षि वाल्मीकि, गीता प्रेस, गोरखपुर।